NEHRU
BAL PUSTAKALAYA

रोहंत और नंदिय

कृष्ण चैतन्य

अनुवाद : मोहिनी राव





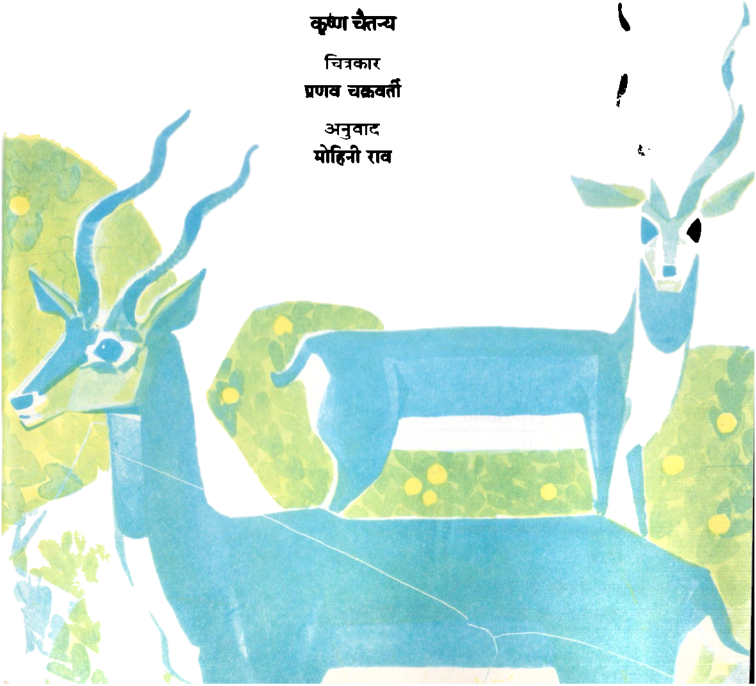
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

रोहंत और नंदिय

कृष्ण चैतन्य

चित्रकार
प्रणव चक्रवर्ती

अनुवाद
मोहिनी राव





ISBN 978-81-237-0504-0

पहला संस्करण : 1972

इक्कीसवीं आवृत्ति : 2007 *(शक 1929)*

Rohanta and Nandiya *(Hindi)*

रु. 17.00

निदेशक, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया
ए-5 ग्रीन पार्क, नई दिल्ली-110 016 द्वारा प्रकाशित

दुनिया में भगवान बुद्ध के करोड़ों भक्त हैं। हम सभी जानते हैं कि वह मानव जाति के सबसे दयालु और बुद्धिमान धर्मोपदेशकों में से एक थे।

असल में बुद्ध कोई नाम नहीं है। इस शब्द का अर्थ है—वह व्यक्ति जिसे बोध या ज्ञान प्राप्त हो गया है, जिसने जीवन का सही अर्थ समझ लिया है, जिसने इस बात पर गहराई से सोचा-विचारा है कि शांति और सुख प्राप्त करने के लिए मनुष्य को किस तरह जीना चाहिए। बुद्ध का असली नाम था सिद्धार्थ। वह एक राजकुमार थे और आज से ढाई हजार वर्ष से भी पहले इस देश में रहते थे।

एक अंधेरी रात को उन्होंने अपना राजमहल त्याग दिया और बरसों देश भर में भ्रमण करते रहे। उनके घर छोड़ने का कारण यह नहीं था कि वह अपने घर, अपने माता-पिता, अपनी पत्नी या पुत्र को प्यार नहीं करते थे।



बात यह थी कि उन्होंने चारों ओर इतना दुःख और कष्ट देखा कि उसे दूर करने का उपाय ढूंढ़े बिना उन्हें चैन नहीं था।

सूर्योदय के साथ-साथ फूल खिल उठते हैं। उन पर पड़ी ओस की बूंदें सूरज की रोशनी में हीरे की कनियों की तरह चमकती हैं। लेकिन सूरज के अस्त होते-होते फूल मुरझा जाते हैं। वसंत में पेड़ फूलों से लहलहा उठते हैं। लेकिन फिर आते हैं पतझड़ और गरमी। पेड़ के सारे पत्ते और फूल झड़ जाते हैं। शिशु बड़े होते हैं, किशोर और किशोरियां बनते हैं, युवा बनते हैं। उनके लिए ज़िंदगी हँसी-खुशी से भरी, ऐसी होती है जैसे खेल का मैदान। लेकिन बुढ़ापे से कोई बच नहीं सकता और एक दिन मनुष्य का ही नहीं, प्रत्येक जीव का अंत हो जाता है।

शायद संसार का यही नियम है और इसको लेकर दुःखी होने का कोई लाभ नहीं। लेकिन जब तक हम जीवित हैं, क्या हम प्रसन्न और संतुष्ट रहने का और एक-दूसरे के प्रति भला बने रहने का प्रयत्न नहीं कर सकते? लगता तो यही है कि मनुष्य ऐसा कर नहीं पाता। दुनिया में इतना अधिक दुःख और असंतोष है और इसकी सबसे बड़ी वजह यही है कि लोग बिना कारण या किसी व्यर्थ की बात पर परस्पर द्वेष रखते हैं, लड़ते-झगड़ते हैं। अगर लोग कम मतलबी होते तो एक-दूसरे के साथ ज्यादा अच्छी तरह निबाह कर सकते और दुनिया अधिक आनंदपूर्ण होती।

राजकुमार ऐसा उपाय खोजने के लिए बेचैन थे जिससे मनुष्य में स्वार्थ न रह जाय और वह भला बन सके। वह जानते थे कि अगर वह सारे सुख-ऐश्वर्य को भोगते हुए महल में रहते रहे तो वह अपने उद्देश्य को कभी पूरा नहीं कर सकेंगे।



रात को उन्होंने घर छोड़ा तो फूलों की सेज पर सोये अपने पत्नी-पुत्र की ओर बार-बार मुड़ कर देखते रहे। अपने नन्हें से पुत्र को छोड़ कर जाते हुए उनका हृदय फटा जा रहा था, और एक बार तो उनको ऐसा लगा कि बच्चे को साथ न ले गये तो वह जा नहीं सकेंगे। लेकिन गहरी नींद में भी माँ नन्हें पुत्र को छाती से चिपकाये अपने हाथ से उसकी रक्षा कर रही थी। राजकुमार ने सोचा, "अगर मैं युवरानी का हाथ परे हटाता हूँ तो वह निश्चय ही जग जायेगी और फिर मैं कभी नहीं जा सकूंगा। अपने परिभ्रमण के बाद, जब मैं मनुष्य के कष्ट को दूर करने का रास्ता पा लूंगा तो मैं फिर अपने पुत्र को देखने वापस आऊँगा।"

वर्षों की यात्रा और चिंतन के बाद राजकुमार को पता लगा कि मनुष्य के जीवन को सुखी और शांतिपूर्ण बनाने की समस्या का उत्तर तो उन्हें उसी रात को मिल गया था जब उन्होंने घर छोड़ा था। उन्होंने देखा था कि नींद में भी माँ का हाथ किस प्रकार बच्चे की रक्षा कर रहा था। लेकिन इसका अर्थ उन्हें उस समय समझ में नहीं आया था। यह अब उन्हें समझ में आया और उन्होंने कहा, "जिस तरह माँ बच्चे की रक्षा करती है उसी तरह हर एक को प्रत्येक प्राणी की रक्षा करनी चाहिए।" यदि हर एक आदमी दूसरे जीवों की चिंता उसी प्रकार करे जैसे माँ बच्चे की करती है तो बड़ों की दुनिया भी



वैसी ही आनंदपूर्ण हो जायेगी जैसे प्रसन्न बच्चों का संसार। जीवों के प्रति बुद्ध के मन में करुणा और प्रेम था। उनकी मृत्यु के बाद भी लोग उनकी इस सदाशयता को सदा याद करते रहे।

आप जानते हैं कि लोगों में आम विश्वास है कि अच्छा कर्म करनेवाले लोग मर कर स्वर्ग जाते हैं और वहाँ हमेशा के लिए सुख से रहते हैं। बुद्ध के बारे में यह कहानी फैल गयी कि जब मनुष्यों और पशु-पक्षियों की एक पीढ़ी के बाद दूसरी पैदा होती रही और उन्हें अपने दुख और कष्ट में सहायता की ज़रूरत पड़ती रही तो बुद्ध ने स्वर्ग का सुख भोगना स्वीकार नहीं किया। इसलिए कहा जाता है कि अलग-अलग रूप में जन्म धारण करके वह पृथ्वी पर अनेकों बार अवतरित हुए। सिद्धार्थ के रूप में जन्म लेने से पहले भी वह कई बार जन्म ले चुके थे। अलग-अलग देशों में, अलग-अलग रूपों में, उनके इन अनेक जन्मों के बारे में कहानियाँ प्रचलित हो गयी थीं। हर एक ऐसी कहानी जातक (जन्म) कहलाती थी, क्योंकि प्रत्येक कहानी बुद्ध के किसी एक ऐसे जन्म को लेकर कही गयी थी। कुछ समय बाद ये सारी कहानियाँ पाली भाषा में लिखी गयीं। पाली पुराने ज़माने में मगध में बोली जानेवाली भाषा थी और पुराने बौद्ध धार्मिक ग्रंथों की भाषा भी थी।

जातक में पाँच सौ से अधिक कहानियाँ हैं। ये कहानियाँ एक अमूल्य निधि हैं। एक बात तो यह है कि ये कहानियाँ बहुत सुंदर हैं। पाली से संस्कृत में इनका अनुवाद और विस्तार से किया गया। दूसरी बात यह है कि प्राचीन मूर्तिकारों ने इन कहानियों को सांची, भरहुत और अमरावती जैसे बौद्ध धर्म के केंद्रों में मूर्तियों और दीवार पर उकेरे चित्रों द्वारा वर्णित किया। चित्रकारों ने भी इन्हें रेखाओं और रंगों के द्वारा फिर से सिरजा। जातक की लगभग सभी कहानियाँ अजंता की गुफाओं में चित्रित हैं।

यहाँ हम दो कहानियाँ सुना रहे हैं : काला हिरन रोहंत और मर्कटराज नंदिय। जब आप इनकी करुणा और आत्म-त्याग की कहानी पढ़ेंगे तो आपके मन में संदेह नहीं रह जायेगा कि ये दोनों करुणामय बुद्ध ही थे जिन्होंने इस धरती को अधिक सुखी बनाने के लिए उस पर बार-बार जन्म लिया।

काला हिरन रोहंत

बहुत-बहुत दिन हुए उत्तर प्रदेश के एक जंगल के साथवाले मैदान में एक काला हिरन पैदा हुआ। उसके माँ-बाप ने उसका नाम रोहंत रखा।

आपने कभी काला हिरन देखा है? हिरन जाति में यह शायद सबसे ज्यादा सुंदर होता है। जंगली स्थिति में ये हिरन केवल भारत में पाये जाते हैं। नर का शरीर पीठ पर चटक काला होता है, नीचे पेट पर का हिस्सा सफेद होता है, दो घुमावदार खूबसूरत सींग होते हैं जिससे वह बहुत शानदार लगता है। हिरनियाँ डील-डौल में छोटी, बिना सींग के होती हैं, लेकिन उतनी ही सुंदर दीखती हैं। उनका रंग पीला ऊँटिया-सा होता है। शुरू-शुरू में रोहंत भी ऊँटिया रंग का था। लेकिन तीन साल की उम्र से ही उसका रंग गहरा काला होने लगा। उसके माँ-बाप बहुत खुश थे क्योंकि रंग बदलने का अर्थ था कि उनका बेटा अब सयाना हो रहा है और अपनी देखभाल खुद कर सकेगा।

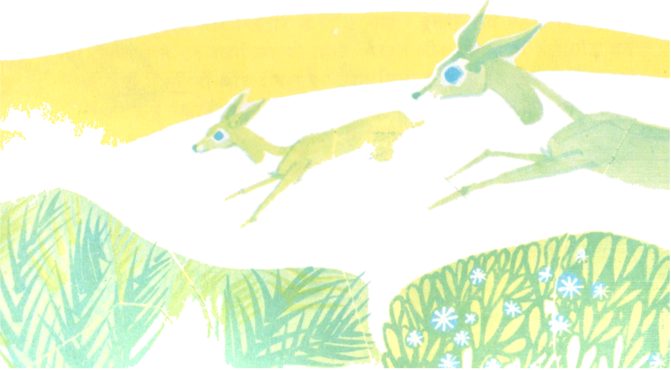
रोहंत और उसके माँ-बाप सौ हिरनों के एक झुंड में रहते थे। हर साल झुंड के कुछ बूढ़े हिरन मर जाते थे, लेकिन नये पैदा भी होते थे, इस कारण वे सौ के सौ ही बने रहते थे। हिरनी एक बार में एक या दो बच्चों को जन्म देती थी। वह उन्हें लंबी-लंबी घास के बीच में छिपा देती थी। बच्चे जल्दी ही



तगड़े हो जाते थे और झुंड में मिल जाते थे।

रोहंत खूब होशियार था और जल्दी ही अपने झुंड के तौर-तरीकों को सीख गया। हिरनों का झुंड घास चरता और अगर जंगल के छोर पर खेतीवारी होती तो खेतों में पहुँच जाता और अनाज के खेत खा डालता। खुले जंगलों में घास के लंबे-चौड़े मैदानों में हिरन पहुँच जाते। अगर किसी किस्म का खतरा दिखायी देता तो लंबी-लंबी घास के पीछे छिप जाते। वे दोपहर तक चरते रहते, और फिर तीसरे पहर चरने पहुँच जाते। दिन में जब गर्मी ज्यादा होती तो लेट कर आराम करते। उनकी सुनने और सूंघने की शक्ति मामूली-सी थी। तेज निगाह और तेज चाल ही उनकी रक्षा किया करती थी। एक-सी तेज़ी से दूर तक दौड़ने में काला हिरन दुनिया के सब से तेज जानवरों में से है और करीब चालीस मील प्रति घंटा की रफ्तार से बराबर दौड़ सकता है। पहली कुछ छलांगों के लिए वह ऊँचा कूदता है, और हवा में कई फुट बिल्कुल सीधा उठ जाता है, फिर चौकड़ी भरता हुआ भागता है। हिरन का दौड़ता हुआ झुंड देखने लायक होता है। ये जानवर विना जोर लगाये सामने से उड़ते हुए-से निकल जाते हैं। कमाल का दृश्य होता है।

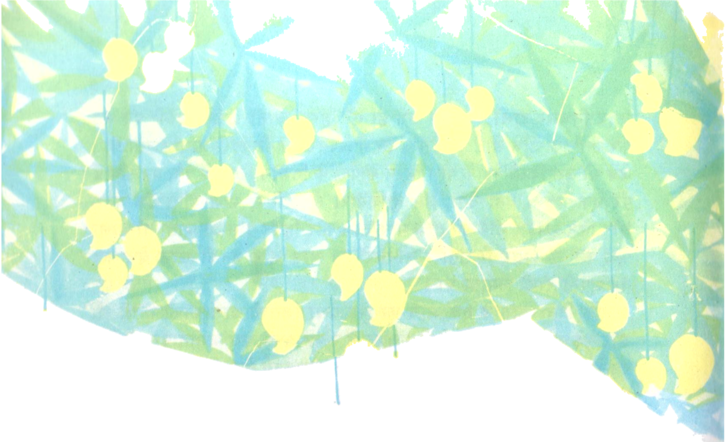
रोहंत जब बहुत छोटा था तो एक घटना घटी जिससे उसकी तेज बुद्धि का पता चलता है। जंगलों में कभी-कभी जंगली आम के पेड़ उग आते हैं। चिड़ियों द्वारा कुतरे गये पके आम अक्सर पेड़ों के नीचे बिखरे पड़े रहते हैं।



अगर निचली डालों पर फल लगे हों तो हिरन अपनी पिछली टाँगों पर उठ कर उन तक पहुंच जाते हैं। इस जंगल में अक्सर एक शिकारी आया करता था। जब भी उसे किसी पेड़ के पास हिरन के पैरों के निशान दिखायी देते, वह ऊँचाई पर एक मचान बना देता, उसे होशियारी से पत्तों से भली-भाँति ढँक देता, और फिर छुपकर मौके की ताक में रहता। कोई हिरन पास आ जाता तो भाला फेंक कर उसे मार गिराता। जानवरों का मांस और उनकी खाल बेच कर वह अपनी रोजी कमाता था।

एक दिन रोहंत ने एक आम का पेड़ देखा जिसकी डालें काफी नीची थीं और पके आमों से लदी हुई थीं। बहुत से अच्छे-अच्छे फल जमीन पर भी गिरे पड़े थे। खूब स्वस्थ होने के कारण रोहंत की भूख बहुत तेज थी। उसने पेट भर छक कर खाया। लेकिन अभी भी बहुत सारे आम पड़े थे। यह देखकर रोहंत





ने सोचा कि कल आकर खाऊंगा ।

रोहंत के जाने के बाद शिकारी उधर से निकला । उसने हिरन के पैरों के निशान देखे । उसने चटपट पेड़ पर एक मचान बांध दिया और घर चला गया । दूसरे दिन तड़के ही कलेवा करके, वह जल्दी-जल्दी जंगल की ओर चला । पेड़ पर बंधे मचान पर छुप कर बैठ गया । उसका भाला बगल में तैयार रखा था । बहुत देर तक कुछ भी नहीं हुआ । फिर उसने अचानक एक छोटे हिरन को पेड़ की ओर आते देखा तो उत्तेजित हो उठा । वह हिरन रोहंत ही था ।

लेकिन अगर शिकारी हिरन के पैरों के निशान पहचानता था तो रोहंत भी शिकारियों के पैरों के निशान पहचान सकता था । यों तो शिकारी बहुत सावधान था फिर भी एक-दो निशान तो पड़ ही गये थे । ऊपर नज़र गयी तो रोहंत को लगा कि पेड़ के पत्तों को भी किसी ने छेड़ा है । उसको शक हुआ कि कुछ खतरा है और वह पेड़ से थोड़ी दूर पर ही रुक गया ।

उत्सुक शिकारी बड़ी अधीरता से हिरन के पास आने की प्रतीक्षा कर रहा था । जब रोहंत टस से मस न हुआ तो उसने पेड़ से एक पका आम तोड़ा और उसे इस तरह से फेंका कि वह जमीन पर गिर कर रोहंत की ओर लुढ़कने लगा । शिकारी को आशा थी कि आम को देख कर रोहंत और पाने के लालच में पास आ जायेगा

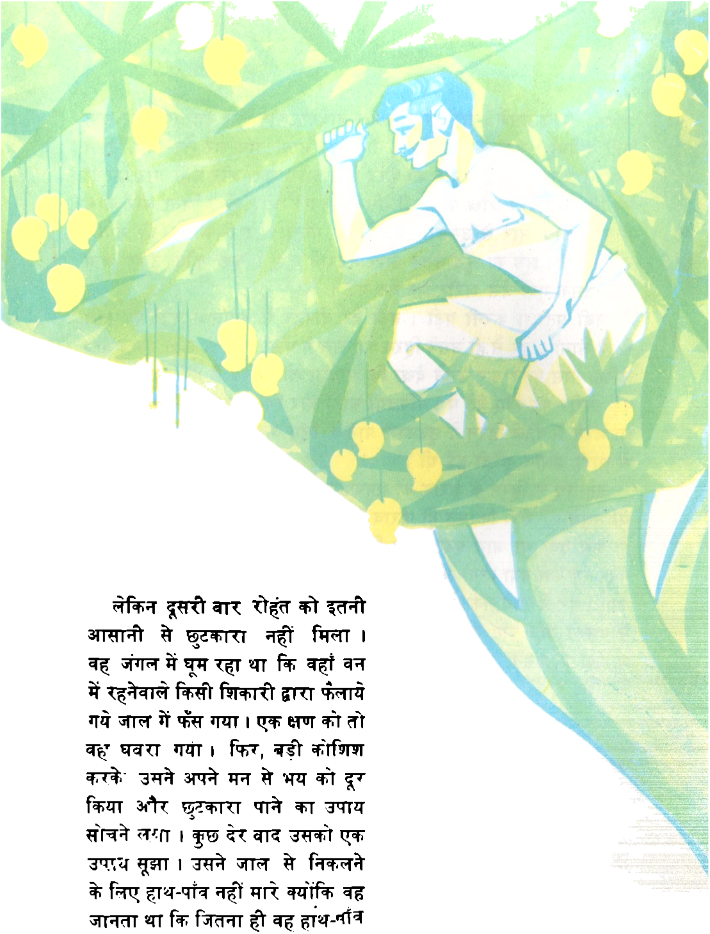




आम लुढ़कता हुआ रोहंत की ओर आने लगा तो उसे फौरन शक हुआ कि दाल में कुछ काला है। इस बार उसने पेड़ के पत्तों की ओर बड़े ध्यान से देखा, खासकर उस जगह जहां पत्ते पिछले दिन से कुछ बदले लग रहे थे। पहले तो उसको खतरे की कोई बात दिखायी नहीं पड़ी। लेकिन उसके भाग्य से उसी समय हल्की-सी हवा चलने लगी और पेड़ के पत्ते हिलने लगे। यों तो हवा कुछ क्षणों के लिए ही चली थी लेकिन इतना ही काफी था क्योंकि रोहंत को शिकारी की झलक मिल गयी थी।

उसने बाहर तो यह बिलकुल नहीं दिखाया कि उसने दुश्मन को देख लिया है, लेकिन जोर से बोला, "मेरे अच्छे पेड़, अभी तक तो तुम्हारी आदत थी कि तुम अपने फलों को जमीन पर सीधा नीचे गिराते थे, लेकिन आज तो तुम अपने फलों को पत्थरों की तरह लोगों पर फेंक रहे हो। इससे तो यही जान पड़ता है, मेरे दोस्त, कि मैं तुमको अब अच्छा नहीं लगता। इसलिए मैं अब चला जाता हूँ। किसी ऐसे पेड़ की तलाश करूंगा जो जरा ज्यादा प्रेम के साथ मेरा स्वागत करे। अच्छा, राम-राम ! मैं चला।"

शिकारी समझ गया कि शैतान हिरन उसे चिढ़ा रहा है। उसने नाराज होकर अपना भाला उसकी ओर फेंका। भाला जहां गिरा, रोहंत उससे कुछ दूर पर ही रुक गया था। भाला जमीन पर गिर पड़ा। शिकारी को और चिढ़ाने के लिए, उस दिलेर हिरन ने भाले को अपने दांतों के बीच में दबा लिया और उसे लेकर भाग गया।



लेकिन दूसरी बार रोहंत को इतनी आसानी से छुटकारा नहीं मिला। वह जंगल में घूम रहा था कि वहां वन में रहनेवाले किसी शिकारी द्वारा फैलाये गये जाल में फँस गया। एक क्षण को तो वह घबरा गया। फिर, बड़ी कोशिश करके उसने अपने मन से भय को दूर किया और छुटकारा पाने का उपाय सोचने लगा। कुछ देर बाद उसको एक उपाय सूझा। उसने जाल से निकलने के लिए हाथ-पाँव नहीं मारे क्योंकि वह जानता था कि जितना ही वह हाथ-पाँव

मारेगा, जाल उसके चारों ओर कसता जायेगा, और फिर वह अपने को छुड़ा नहीं पायेगा। वह करवट लेकर, टाँगों को सीधा तान कर लेट गया, उसने पंजों से आस-पास की जमीन को कुरेद दिया और चारों ओर घास और मिट्टी को बिखेर दिया। आँखें पलट लीं, सिर को एक ओर झुका लिया और जीभ निकाल ली। लार से उसका सारा बदन गीला और चिपचिपा हो गया। मक्खियों का झुंड का झुंड उसके ऊपर मँडराने लगा। कुछ कौए उतर आये और उसके मुर्दा जैसे शरीर पर बैठ गये।

लंबी प्रतीक्षा करनी पड़ी। बड़ी देर दोपहर में बहेलिया वहाँ का हाल देखने आया। दूर से ही उसने हिरन को जाल में फंसा देखा तो बहुत खुश हुआ। लेकिन पास पहुँच कर उसने देखा कि मामला तो गड़बड़ है। हिरन के अकड़े पड़े शरीर पर कौए बैठे थे। मक्खियाँ चारों ओर भिनक रही थीं। जान पड़ता था मरने से पहले हिरन ने छुटकारा पाने के लिए बहुत हाथ-पाँव मारे थे, इसी से सारी जमीन कुरेदी हुई थी।

बहेलिये ने हिरन के शरीर को थपथपाया। जीवन का कोई भी चिह्न नहीं था उसमें। "मेरी किस्मत ही खराब है," बहेलिया भुनभुनाया। "आज सुबह ही फंस गया था जान पड़ता है। निकल भागने की कोशिश में जाल इसकी गर्दन पर कस गया होगा और दम घुट कर मर गया। यह तो अभी से ही सड़ने लगा। घर ले जाने तक तो इसका गोश्त खाने के काबिल भी नहीं रह जायेगा। मैं इसको यहीं काट डालता हूँ। कुछ गोश्त यहीं खा लूंगा और कुछ घर ले जाऊँगा।" उसने जाल खोल डाला, जानवर को वहीं पड़ा रहने दिया, और



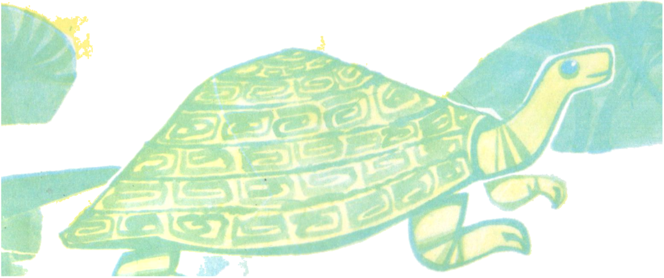


आग जलाने के लिए लकड़ियाँ और पत्तियाँ बटोरने चला गया। बहेलिया काफी दूर निकल गया तो रोहंत उठ कर खड़ा हुआ, अपनी गर्दन सीधी की, शरीर की अकड़ दूर की और तीर की तरह भाग कर अपने झुंड में मिल गया।

जैसे-जैसे रोहंत बड़ा होता गया, इस तरह की घटनाओं से उसकी समझ में आया कि जिंदगी बहुत सुंदर है, लेकिन खतरों से भरी हुई है। इन ख़तरों का हमेशा अकेले ही सामना करना संभव नहीं होगा। उसकी समझ में आया कि जिंदगी में मित्रों की जरूरत है जो मुसीबत पड़ने पर उसकी मदद कर सकें और जिनकी वह मदद कर सके।

जंगल के किनारे लंबी घास के मैदान के पास जहाँ रोहंत रहता था, एक कठफोड़वे ने एक ऊँचे पेड़ की चोटी पर अपना घोंसला बनाया था। कठफोड़वा जिस पेड़ पर रहता था उसके पास एक छोटी-सी तलैया थी जिसमें एक कछुआ रहा करता था। उससे कुछ दूरी पर एक बड़ी झील थी जहाँ शाम को हिरनों का झुंड पानी पीने के लिए आया करता था। लेकिन रोहंत को जंगलवाली तलैया ही पसंद थी क्योंकि वहाँ वह कछुए के साथ मिल कर गपशप किया करता था। कठफोड़वा भी उड़ कर नीचे आ जाता और उनके साथ मिल कर बैठता। तीनों में खूब दोस्ती हो गयी थी।

एक दिन एक बहेलिया उस रास्ते से निकला और तलैया तक चले जाते हुए हिरन के पैरों के निशान देखे। बहेलिया कुछ हफ़्ते पहले भी उधर आया था, लेकिन उसने उस समय ऐसे कोई निशान नहीं देखे थे जिससे जान पड़ता

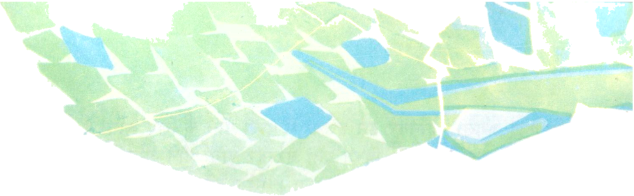


कि कोई जंगली जानवर इस तलैया में पानी पीने के लिए आता है। उसको अब पता चला कि कोई हिरन यहाँ बराबर पानी पीने आता है। चमड़े की रस्सी का फंदा लगा कर वह चला गया। तलैया की तलहटी में कछुआ आराम कर रहा था। उसने शिकारी को फंदा लगाते नहीं देखा।

काफी शाम गये रोहंत तलैया पर गया और फंदे में फँस गया। उसका चिल्लाना सुनकर उसके दोनों दोस्त वहाँ पहुँच गये। कछुआ ऊपर चढ़ कर ताल के किनारे आ गया और कठफोड़वा नीचे उड़ कर एक पत्थर पर बैठ गया। कठफोड़वे ने कछुए से कहा, "दोस्त, तुम्हारे दाँत मजबूत हैं। इस फंदे को काट डालो। चमड़े की रस्सी बहुत मजबूत लगती है। शायद इसे काटने में बहुत देर लगे—शायद सारा दिन ही लग जाय। इस बीच मैं देखता हूँ कि शिकारी को तुम्हारा काम खत्म होने से पहले यहाँ आने से रोकने के लिए मैं क्या कर सकता हूँ।"

कठफोड़वा उड़ कर शिकारी की झोंपड़ी तक गया जो कुछ दूर, जंगल के किनारे, खुली जगह पर बनी थी। झोंपड़ी के आँगन के सामनेवाले एक पेड़





पर बैठा वह वहाँ सारी रात इंतजार करता रहा। पौ फटते ही हाथ में छुरा लिए शिकारी बाहर निकला। जैसे ही कठफोड़वे ने उसको देखा, वह उड़ कर सीधा उसके मुँह पर आया, चीखता हुआ गालों पर पंख मारने लगा और उस पर बीट गिरा कर उसको गंदा कर दिया। शिकारी बड़ा अंधविश्वासी था और शकुन-अपशकुन को बहुत मानता था। काम पर जाने के लिए घर से निकलते ही मुँह पर चिड़िया के बीट का गिरना उसको बहुत बुरा अपशकुन जान पड़ा। उसने सुबह न जाने का फ़ैसला किया।

दोपहर को उसने फिर घर से बाहर निकलने का निश्चय किया। उसने खिड़की से झांक कर देखा कि चिड़िया है या चली गयी। लेकिन कठफोड़वा वहीं बैठा था और उसने शिकारी को खिड़की से झाँकते भी देख लिया था। शिकारी ने सोचा कि अपशकुनी चिड़िया की मुसीबत से बचने के लिए वह पीछे के दरवाजे से निकल जायेगा। लेकिन कठफोड़वा बड़ा चालाक था। उसने ताड़ लिया था कि शिकारी क्या करनेवाला है। शिकारी पीछे के दरवाजे से निकला तो कठफोड़वा उसके लिए वहाँ तैयार था। वह फिर उड़ कर उस पर आ गया, उसके गालों पर पंख मारे और उसके शरीर पर बीट गिरायी। अब तो शिकारी को बहुत गुस्सा चढ़ आया। वह चिड़िया को पकड़ने की कोशिश करने लगा ताकि उसका गला दबा कर उस मुसीबत को सदा के लिए दूर कर दे। कठफोड़वा समझ गया कि अभी शिकारी से लड़ना खतरनाक होगा। वह उड़ कर एक पेड़ पर पहुँचा और वहाँ बैठ गया। वहाँ से वह देखने लगा कि शिकारी अब क्या करता है। शिकारी का मिजाज तो बिगड़ा हुआ था ही उसने सोचा कि चाहे शकुन हो या अपशकुन, अब वह जंगल में उस तलैया पर जरूर जायेगा। कठफोड़वे ने उसको गुस्से में लंबे-लंबे डग भरते जाते देखा तो उसने सोचा अब यहाँ रुकने का कोई लाभ नहीं। मित्रों को साव-धान करने के लिए वह जितनी तेजी से उड़ सकता था, तलैया की ओर उड़ गया।

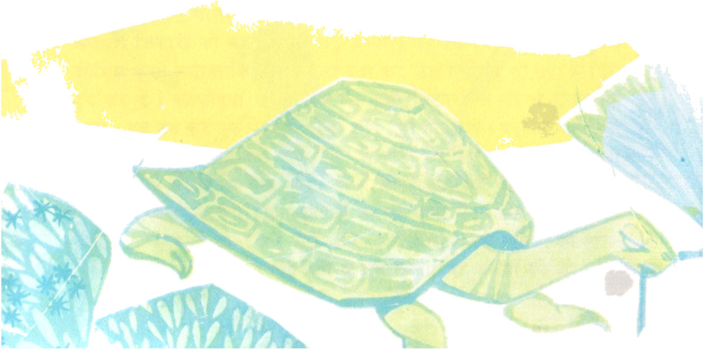


इस बीच कछुए ने चमड़े की रस्सी को करीब-करीब काट डाला था। सिर्फ एक हिस्सा रह गया था। उसके दाँत ऐसे लगने लगे थे मानो अभी गिर जायेंगे और उसका सारा मुँह खून से भर गया था। कठफोड़वे ने आकर बताया कि शिकारी अभी पहुँचने ही वाला है। कछुए के जबड़े और दाँत दुख रहे थे फिर भी वह सारी ताकत लगाकर रस्सी को जोर-जोर से काटने लगा। जब रोहंत ने शिकारी को छुरी हाथ में लिए अपनी ओर दौड़ते देखा, तो उठकर बिल्कुल तैयार हो गया। शिकारी अभी दस कदम पर ही था कि रस्सी टूट गयी और हिरन हवा की तरह निकल कर जंगल में घुस गया। कठफोड़वा उड़ कर पेड़ की सबसे ऊँची डाल पर जा बैठा। लेकिन बेचारा कछुआ, जिसने सारी रात और सारा दिन काम किया था, कमजोरी के कारण बेहोश हो गया और जहाँ था वहीं पड़ा रहा।

शिकारी बहुत ही गुस्से में था। उसने कछुए को उठा कर अपने झोले में डाल लिया और झोले को एक पेड़ की निचली डाल पर बाँध दिया।

भागते हुए रोहंत ने पीछे मुड़ कर यह देख लिया।

बहेलिये की हरकत को देखते ही रोहंत दौड़ते-दौड़ते एकदम ऐसे रुका कि गिरते-गिरते बचा। वह अपने दोस्त को, जिसने उसको बचाने के लिए इतनी मेहनत की थी, छोड़ कर कैसे जाता ? उसने फौरन एक तरकीब सोच निकाली। उसने लड़खड़ा कर गिरने का बहाना किया, फिर उठा, मानो बड़े



दर्द में हो, और फिर लड़खड़ा कर गिरा । इस तरह बार-बार उठता और फिर गिर जाता । बहेलिये ने यह देखा तो उसे विश्वास हो गया कि हिरन बहुत ज्यादा थका है और तेज भाग नहीं पायेगा । उसने अपना छुरा ताना और उसे पकड़ने चला । रोहंत बार-बार लड़खड़ा कर गिरने का स्वांग करता रहा, लेकिन बहेलिये की पहुँच के बाहर रहा और इस तरह उसे अपने पीछे-पीछे जंगल के अंदर ले गया । जब उसने देखा कि वे काफी दूर निकल आये हैं







तो बहेलिये को चकमा देकर, हवा की तरह दौड़ता हुआ, दूसरे रास्ते मे निकल भागा। जिस थैले में कछुआ बंधा था उसे रोहंत ने अपने सींग से उठा कर जमीन पर पटक दिया और उसे फाड़ कर कछुए को आजाद कर दिया। कछुए ने रोहंत को धन्यवाद दिया और रेंगता हुआ अपनी तलैया में गायब हो गया।

इसी प्रकार समय बीतता गया, और रोहंत बड़ा होकर अपने दल के बड़ों में गिना जाने लगा। जब दल का बूढ़ा मुखिया मर गया तो सब ने रोहंत को अपना नया नेता चुन लिया।

उस समय किसी को इसका संदेह नहीं हुआ था कि रोहंत के सिर पर भारी मुसीबत आनेवाली है।



बनारस का बूढ़ा राजा मर गया। उसका बेटा गद्दी पर बैठा। नये युवा राजा को शिकार का बड़ा शौक था। जिस जंगल और मैदान में हिरनों का झुंड रहता था वे इसी राज्य में थे। नये राजा के शिकार-प्रेम के कारण जानवरों को तो खतरा हो ही गया, प्रजा को भी बड़ी परेशानी हो गयी। शहर और गाँवों के सब रहनेवालों को राजा अपने साथ शिकार पर चलने की आज्ञा देता था। जहाँ वह शिकार खेलता था उसके चारों ओर वे घेरा डाल देते थे, झाड़ियों को पीट-पीट कर हिरनों को बाहर निकालते थे, और तब राजा उन्हें अपने तीर-कमान का निशाना बना कर मार गिराता था। युवा राजा करीब-करीब हर रोज ही शिकार खेलने जाता था, इस कारण लोगों को अपना काम-धंधा करने और रोजी कमाने में बड़ी कठिनाई होती थी।

राज्य के कुछ बुजुर्गों ने इस समस्या का हल सोच निकालने के लिए सभा की। राजा का महल एक बहुत लंबे-चौड़े अहाते के बीच में था। एक बूढ़े आदमी ने एक सुझाव दिया, "इस अहाते के चारों ओर बाड़ लगा कर अच्छी बढ़िया घास उगायें और दो-चार तलैया भी खोद दें। फिर हिरनों के बड़े-बड़े झुंड इस अहाते में रह सकेंगे। उनको जितनी घास और पानी चाहिए यहाँ मिल जायेगा। फिर हम हिरनों को पकड़-पकड़ कर यहाँ लायेंगे। जब हिरन महल के पास ही रहेंगे तो महाराज जब चाहेंगे उनका शिकार कर सकेंगे। फिर हमें परेशान करने की जरूरत नहीं पड़ेगी।"

सब लोगों को यह विचार बहुत पसंद आया। वे राजा के पास गये और अपना प्रस्ताव उनके सामने रखा। राजा खुशी-खुशी मान गया। यह सोच

कर कि अब उनकी परेशानी का अंत हो जायेगा, लोगों ने बड़े उत्साह से अहाते में घास लगायी और तालाब खोदे। उनकी मेहनत से वह अहाता कुछ ही समय में एक खूबसूरत बगीचा बन गया। जब चारों ओर बाड़ा बन गया तो सारा शहर का शहर जंगलों में जा पहुँचा। जंगल को घेर कर, पेड़ों और झाड़ियों को डंडों से पीट-पीट कर हिरनों को उनकी मांदों से बाहर निकाला। फिर ढोल पीट-पीट कर और चीख-चिल्ला कर उन्होंने इतना हल्ला- गुल्ला मचाया कि हिरन डर गये, और उन्हें खदेड़ कर बाग में ले आया गया। जब सारे हिरन बाड़े के अंदर आ गये तो शहरवालों ने फाटक बंद कर दिये। तब उन्होंने जाकर राजा से कहा कि अब आप चाहें तो सारा दिन शिकार खेल सकते हैं। शहरवालों को साथ ले जाने की जरूरत नहीं पड़ेगी।





काले हिरनों के दो झुंड पकड़े गये थे। एक झुंड वह था जिसका नेता रोहंत था। दूसरे झुंड के नेता का नाम था हरिण। वह भी बड़ा योग्य नेता था। लेकिन वह अपने दल पर प्रेम से नहीं बल्कि कड़ाई से शासन करता था। जब राजा हिरनों का विहार देखने गया तो इन दोनों नेताओं पर उसकी नजर पड़ी। उसने इतने खूबसूरत हिरन कभी नहीं देखे थे। राजा ने हुक्म दिया कि उन दोनों हिरनों को कभी किसी किस्म का नुकसान न पहुँचने पाये।

राजा लगभग हर रोज शिकार खेलने जाता था। उसको अपने अचूक निशाने पर बड़ा घमंड था। निशाना साधने से पहले वह हिरनों को इसका पूरा मौका देता था कि वे जितनी तेज बन पड़े दौड़ कर दूर निकल जायें। एक हिरन मार चुकने के बाद राजा उस दिन और शिकार नहीं खेलता था। लेकिन ज्योंही यह भयानक निशानेबाज बगीचे में पहुंचता, हिरन डर के मारे इधर-उधर भागने लगते। इस भगदड़ का नतीजा यह होता कि इसके पहले कि राजा किसी हिरन को मार कर उस दिन का शिकार खतम करता, कई हिरन बुरी तरह घायल हो जाते।

इससे हिरनों को बड़ा ही कष्ट हो रहा था। यह देख कर रोहंत ने हरिण से कहा, " दोस्त, हम लोगों की किस्मत सचमुच खराब है। यह तो निश्चय



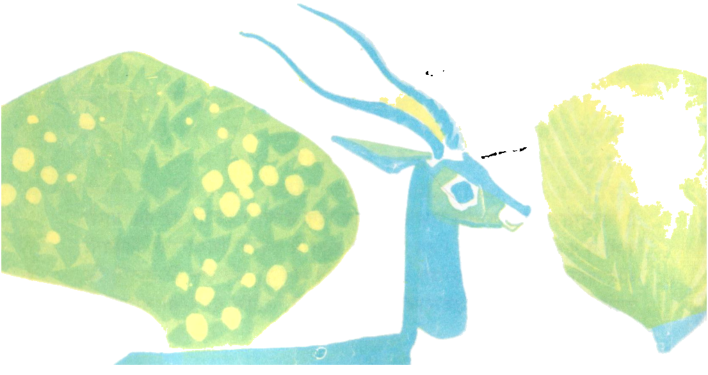
है कि हमारा कोई न कोई एक साथी हर दिन मरेगा। यों तो हर एक प्राणी कभी न कभी मरता ही है। हम जंगल में रहते थे तब भी शिकारियों, किसानों और जंगली जानवरों से हमेशा बच नहीं पाते थे। यह बड़े दुख की बात है कि हममें से किसी एक को हर रोज मरना पड़ता है, लेकिन दूसरे भी घायल हो

जाते हैं और इतना कष्ट उठाते हैं।"

हरिण ने कहा, " हां, यह है तो बड़े दुख की बात। लेकिन हम कर ही क्या सकते हैं ? कोई उपाय भी तो नहीं।"

" एक उपाय तो है," रोहंत ने कहा। " हम हर दिन एक हिरन का नाम निकालें। जिसका नाम निकले वह उस दिन स्वयं राजा का शिकार बनने के लिए जाये। एक दिन मेरे झुंड में से किसी का नाम निकाला जाय और दूसरे दिन तुम्हारे झुंड में से। इससे जिसको मरना होगा वह तो मरेगा ही लेकिन कम से कम दूसरों को तो चोट नहीं पहुँचेगी।" हरिण को यह उपाय पसंद आया।

राजा को शिकार का शौक तो बहुत था लेकिन वह हर रोज सिर्फ एक हिरन चाहता था। बेकार में दूसरे हिरनों के घायल हो जाने से उसको भी दुख होता था। इस कारण वह हिरनों के प्रस्ताव को खुशी-खुशी मान गया। लेकिन उसको यह सुझाव पसंद नहीं आया कि एक हिरन स्वयं ही हर रोज उसके पास आये मानो वह शिकारी नहीं, कसाई हो। उसने बगीचे में बेड़े के आगे कुछ फासले पर एक और नया बेड़ा बनवा दिया। दोनों बेड़ों के बीच का रास्ता घुड़-दौड़ के मार्ग जैसा बन गया जो पूरे अहाते को घेरे हुए था। राजा ने इस रास्ते पर एक खास जगह को दौड़ शुरु करने का स्थान मान कर वहां, अंदरवाले



बेड़े में, एक फाटक बनवा दिया। जिस हिरन की उस दिन बारी होती वह इस फाटक मेंसे निकल कर दोनों बेड़ों के बीचवाले रास्ते पर आ जाता। राजा प्रस्थान वाली जगह पर घोड़े पर बैठा इंतजार करता। जब हिरन काफी आगे निकल जाता तो राजा उसका पीछा करता और अपने तीर-कमान से निशाना साध कर उसको मार गिराने की कोशिश करता।

राजा यह भी मान गया कि अगर हिरन तीर का निशाना बनने से बच जाय और पूरा चक्कर काट कर उसी जगह पर वापस पहुँच जाय जहाँ से चला था, तो उसकी जान बख्श दी जायेगी, और शिकार बनने के लिए उसको तभी आना होगा जब दुबारा उसकी बारी आयेगी। लेकिन राजा का निशाना इतना अचूक था कि कभी कोई हिरन बच नहीं पाता था। जिस जानवर की शिकार बनने की बारी आती थी वह जानता था कि वह सूर्योदय फिर कभी नहीं देखेगा। यह बड़े दुख की बात थी। फिर भी पहले से तो हालत अच्छी ही थी जब राजा के आते ही हिरनों में डर के मारे भगदड़ मच जाती थी और एक हिरन मरता था तो छः घायल होते थे।

एक दिन एक हिरनी की बारी आयी जिसके गर्भ में बच्चा था। हिरनी ने सोचा, " अगर मैं आज मारी गयी तो मेरा बच्चा कभी पैदा नहीं होगा। मेरे



साथ वह भी मारा जायेगा। अगर बच्चे के पैदा होने तक मुझे छूट मिल जाय तो बाद में मरने में मुझको जरा भी आपत्ति न होगी।" यह हिरनी हरिण के झुंड में थी। उसने अपने नेता से कहा कि उसकी बारी कुछ दिनों के लिए टाल दी जाये। हरिण उसके मन की हालत समझता तो था लेकिन उसने कहा, "यह तुम्हारा दुर्भाग्य है, लेकिन मैं क्या करूं? तुम्हारी बारी किसी और को नहीं दी जा सकती। ज़िंदगी किसको प्यारी नहीं होती? हर एक चाहता है कि ज्यादा से ज्यादा दिन जिये। किसी और हिरन को तुम्हारी जगह भेजना उसके साथ अन्याय होगा।" बेचारी हिरनी को हरिण की बात उचित जान पड़ी। ठीक ही तो है, अपनी बारी से पहले कौन मरना चाहेगा? वह जान गयी कि आशा तो कोई नहीं है, लेकिन एक बार आखिरी कोशिश कर देखना चाहती



थी। वह दूसरे झुंड के नेता रोहंत के पास गयी कि शायद वह कोई सलाह दे सके। रोहंत ने बड़े धैर्य से उसकी बात सुनी। उसने भी कहा कि हरिण का कहना ठीक है। वह हिरनी की जगह आज किसी और को मरने के लिए भेजे तो अन्याय होगा। लेकिन साथ ही उसने यह भी कहा, 'जब तक तुम्हारा बच्चा पैदा न हो जाय तुम्हें जाने की जरूरत नहीं है।"

" लेकिन फिर आज का काम कैसे चलाओगे ?" हिरनी ने पूछा।

" मैं किसी न किसी तरह काम चला लूंगा," रोहंत ने जवाब दिया।

शिकार के लिए राजा आया तो उसको बड़ा आश्चर्य हुआ जब शिकार-वाले स्थान पर स्वयं रोहंत सामने था।

"मेरे दोस्त, तुम जानते हो कि मेरा हुक्म है कि तुमको और दूसरे झुंड के नेता हरिण को कोई चोट न पहुंचाये। तुमको औरों के साथ अपना नाम नहीं देना चाहिए था। मैं अपने ही आदेश के खिलाफ कैसे जा सकता हूँ ? तुम वापस जाओ और किसी और हिरन को भेज दो।"



तब रोहंत ने हिरनी के बारे में बताया और कहा, " अगर हरिण या मैं उसकी जगह किसी और हिरन को भेजते तो अन्याय होता । लेकिन मैं ऐसा नहीं कर रहा हूँ—उसकी जगह मैं खुद ही अपनी जान देने के लिए आया हूँ ।"

रोहंत की बात सुनकर राजा इतना प्रभावित हुआ कि काफी देर तक तो कुछ बोल ही नहीं सका । फिर कहा, " आज शिकार नहीं होगा । मैं तुमसे फिर बात करना चाहता हूँ । शाम को मुझसे मिलना ।"

जब रोहंत शाम को मिला तो राजा ने कहा, " मैंने फैसला किया है कि मैं तुम दोनों की ही जान नहीं लूँगा । न तुमको कोई नुकसान पहुँचेगा, न हिरनी को ।"

" यह फैसला आपने क्यों किया ?" रोहंत ने पूछा ।

" क्यों ?" राजा ने जवाब दिया, " अगर मैं उस बेचारी हिरनी को या तुम्हारे जैसे बड़े दिलवाले हिरन को मारता तो यह बड़ी निर्ममता होती, बड़ा अत्याचार होता ।"

" महाराज", रोहंत ने कहा, " क्या हमारी तरह झुंड के सभी हिरन आपकी दया पाने के अधिकारी नहीं हैं ?"

राजा को रोहंत की बात लग गयी । वह कुछ देर सोचता रहा फिर उसने एक बड़ा फैसला किया । उसने कहा, " आज से मैं हिरन का शिकार ही छोड़ दूंगा । आज से यह बगीचा हिरनों का विहार है । वे स्वच्छंद और निर्भय होकर यहाँ घूम-फिर सकते हैं । जंगलों और खेतों में भी हिरनों को कोई नहीं मार सकेगा । हाँ, यदि वे किसान के खेतों को बरबाद कर रहे हों, तो और बात है ।"

इस तरह पशु-विहारों या 'अभयारण्यों' का प्रारंभ हुआ । लेकिन ज्यों-ज्यों समय बीतता गया हम पशुओं के लिए प्रेम की अपनी इस परंपरा को भूलते गये । भारत में किसी भी और जानवर ने मनुष्य के क्रूर हाथों इतना कष्ट नहीं पाया जितना काले हिरन ने । सैकड़ों की संख्या में बेचारे मारे गये ।

हमारी इस निर्ममता का फल क्या हुआ, यह हमें अब मालूम हो रहा है । आज देश भर में काले हिरनों की रक्षा की जा रही है । उनको मारना मना है ।



मर्कटराज नंदिय

मर्कटराज नंदिय

एक बार मध्य प्रदेश के एक जंगली इलाके में बंदरों के एक झुंड में एक बंदर का बच्चा पैदा हुआ। उसके माँ-बाप ने उसका नाम नंदिय रखा।

नंदिय बड़ा होने लगा। वह बहुत दयालु था लेकिन बड़ा साहसी था, जोखिम से बिल्कुल नहीं डरता था और जंगल की खोजबीन करने के लिए अकेला ही घूमा करता था। उसके माँ-बाप ने उसको समझाया कि जब तक वह कुछ बड़ा और सयाना न हो जाय तब तक उसे दल के साथ ही रहना चाहिए और अकेले घूमना-फिरना नहीं चाहिए। कहीं कोई खतरा सामने आ पड़ा तो वह अकेला क्या कर सकेगा ? कुछ दिनों तक तो नंदिय उनका कहना मानता। लेकिन रोमांच और नये अनुभव की उसमें इतनी इच्छा थी कि कुछ दिनों बाद उससे दल के साथ रहा न जाता और वह फिर अकेला ही घूमने निकल

पड़ता। लेकन सूर्यास्त से पहले-पहले अपने दल में वापस आ मिलता।

एक ऐसे ही मौके पर नंदिय एक पेड़ से दूसरे पर कूदता रहा। धीरे-धीरे जंगल के मध्य से, जहाँ उसका दल रहता था, वह बहुत दूर, जंगल के छोर पर चला गया। उसने देखा कि जंगल जहाँ खत्म होता है वहाँ एक छोटी-सी नदी है और नदी के बीच में एक द्वीप है। नंदिय यह देख कर बहुत खुश हुआ कि द्वीप पर आम के पेड़ लगे हैं। पके-पके फलों से पेड़ लदे हुए थे।



वह द्वीप पर पहुँचना चाहता था, लेकिन नदी उसके लिए बहुत चौड़ी थी। अगर नदी सूखी होती तो भी, उसके जैसे तगड़े जवान बंदर को भी, उसे फांदने के लिए दो लंबी छलाँगें भरनी पड़तीं। लेकिन हाल ही में वर्षा हुई थी और नदी बाढ़ पर थी। गहरी भी लगती थी, और धारा बहुत तेज थी।

हतोत्साह होकर नंदिय लौट कर अपने दल में वापस जाने की सोच ही रहा था कि उसे द्वीप और नदी के किनारे के बीच, पानी के ऊपर कोई काली-सी चीज नजर आयी। उसने ध्यान से देखा तो मालूम हुआ कि किसी बड़ी चट्टान का ऊपरी हिस्सा है। चट्टान के चारों ओर भंवर काटते हुए पानी



में दूध जैसी सफेद फेन उठ रही थी। चट्टान का बहुत ही थोड़ा-सा हिस्सा पानी के बाहर था। लेकिन नंदिय ने सोचा कि इतनी जगह काफी है कि वह नदी के किनारे से एक छलांग लेकर चट्टान पर पहुँच जाय, और फिर दूसरी छलाँग में चट्टान से पेड़ पर। खतरा तो अवश्य लगता था, लेकिन नंदिय बड़ा साहसी बंदर था। उसने द्वीप पर पहुंचने का फैसला कर ही लिया।

द्वीप पर ढेरों आम थे। उसने इतने मीठे और खुशबूदार आम आज तक कभी नहीं खाये थे। उसने इतना छक कर खाया कि जब घर जाने का समय हुआ तो उससे हिला-डुला भी नहीं गया। उसका पेट फटा जा रहा था और उसको लग रहा था कि उसका वजन अचानक दुगुना हो गया है। छलाँग



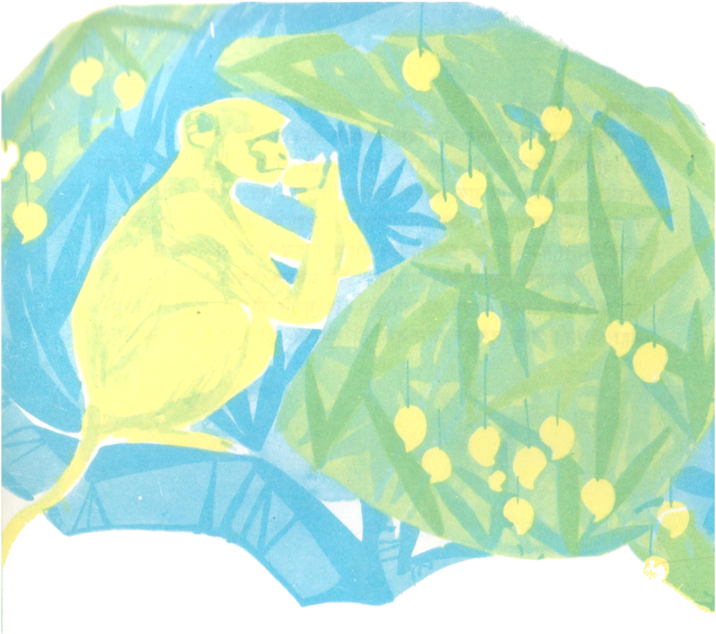
लगाने से पहले उसको पूरे घंटे भर प्रतीक्षा करनी पड़ी । फिर भी वह चट्टान तक नहीं पहुंच पाया । उसके किनारे तक ही पहुंचा । चट्टान के एक कोने को पकड़ कर वह पानी में छपाका मारता रहा, और इस तरह पानी के तेज बहाव में बह जाने से अपने आपको वचाता रहा । फिर किसी तरह चट्टान पर चढ़ कर बैठ गया और सुस्ताने के लिए थोड़ी देर बैठा रहा । पानी बहुत ठंडा था और नंदिय विल्कुल भीग गया था । उसने मन ही मन कहा, " अब मैं इतना लालच कभी नहीं करूंगा, कान पकड़ता हूं । जितनी भूख होगी उतना ही खाऊंगा ।" जब वह सुस्ता चुका और दोपहर की धूप में अपने शरीर को सुखा चुका, तो चट्टान से कूद कर नदी के किनारे पर आ गया और अपने दल में



वापस चला गया ।

बड़े उत्साह और शान से नंदिय ने अपने माँ-बाप और दल के दूसरे बंदरों को दुनिया के सब से मीठे आमों से भरे उस द्वीप के बारे में बताया । लेकिन किशोरों में अपनी ही एक ख्याली दुनिया में रहने की आदत होती है और वे उत्साह में आकर हर चीज को इतना बढ़ा-चढ़ा कर बताते हैं कि बड़े लोग उनकी बातों को हंसी में टाल देते हैं । नंदिय के दल के बंदरों ने सोचा कि या तो वह गप हाँक रहा है और या फिर उन्हें बेवकूफ बनाने की कोशिश कर रहा है । जब नंदिय ने उन सब को द्वीप पर चलने की दावत दी तो उन्होंने कहा, " नहीं भाई, तुम्हारे आम तुम्हें ही मुबारक हों । हमें नहीं जाना ।"





और नंदिय ने किया भी यही ।

उसने जव इस द्वीप का पता लगाया था तो वरसात अभी शुरू ही हुई थी। अव वरसात पूरे जोर पर थी। भारी वर्षा हो रही थी। उसने देखा कि नदी में पानी वढ़ गया है और चट्टान का जो हिस्सा पानी के ऊपर था वह छोटा होता जा रहा था। उसको तव समझ में आया कि उसे चट्टान पर बड़ी सावधानी से नजर रखनी पड़ेगी। जिस दिन वह विल्कुल पानी के अंदर चला जायेगा, वह द्वीप तक नहीं पहुंच पायेगा। पानी के घटने और चट्टान के फिर पानी से बाहर आने में शायद हफ्तों लग जायें।

नदी पर कुछ दूर आगे एक दैत्य के समान भारी-भरकम घड़ियाल रहता

था । वह जहाँ पड़ा रहता था वहाँ से हर रोज सवेरे नंदिय को कूद कर द्वीप पर जाते और फिर घर वापस जाते देखा करता था । उस लालची घड़ियाल को बंदर का मांस बहुत पसंद था । उसने मन ही मन फैसला किया कि वह किसी न किसी उपाय से नंदिय के मांस का मज़ा जरूर लेगा । नंदिय ने घड़ियाल को नहीं देखा था । वह बाहर नहीं निकलता था क्योंकि वह जानता था कि नंदिय ने उसे देख लिया तो डर जायेगा और शायद यहाँ कभी नहीं आयेगा ।

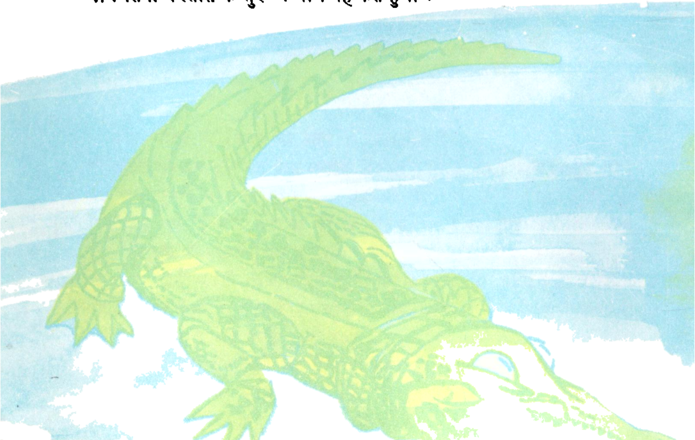
नदी में पानी बढ़ता रहा । एक दिन नंदिय आया तो उसने देखा कि भंवर-दार फेनिल पानी के ऊपर चट्टान का बहुत जरा-सा हिस्सा ही दिखायी दे रहा है । इस हालत में छलाँग लगाने की कोशिश करना खतरे से खाली नहीं



था। पहले तो वह सोचता रहा कि क्या करे। लेकिन वह इतनी बार यहाँ से छलांग लगा चुका था कि उसको भरोसा था कि चट्टान के उस जरासे हिस्से पर भी वह ठीक-ठाक उतर सकेगा, और फिर वहाँ से दूसरी छलांग लगायेगा। उसको यह भी समझ में आ गया था कि आज आखिरी दिन है। जब तक बरसात खत्म नहीं होती और नदी का पानी उतर नहीं जाता वह द्वीप पर फिर नहीं जा सकेगा।

यह सोच कर कि वह अभी बहुत दिनों तक द्वीप पर नहीं जा पायेगा, उसने रोज से भी ज्यादा समय वहाँ बिताया। जब देर होने लगी तो वह जल्दी-जल्दी उस स्थान पर पहुँचा जहाँ से वह चट्टान पर पहुँचने के लिए छलांग लगाया करता था। सूरज उतर कर पेड़ों के पीछे छिप गया था। हर रोज जब वह लौटता था तो नदी, धूप में चमका करती थी, लेकिन आज उस पर छाया थी।

नंदिय कूदने ही वाला था कि अचानक ठिठक गया। उसे चट्टान रोज जैसी नहीं लग रही थी। अभी कुछ देर पहले तो उसका जरा-सा हिस्सा पानी के बाहर दिखायी दे रहा था। लेकिन अचानक बढ़ कर उतना बड़ा हो गया था जितना बरसात के शुरू में था। यह कैसे हुआ?



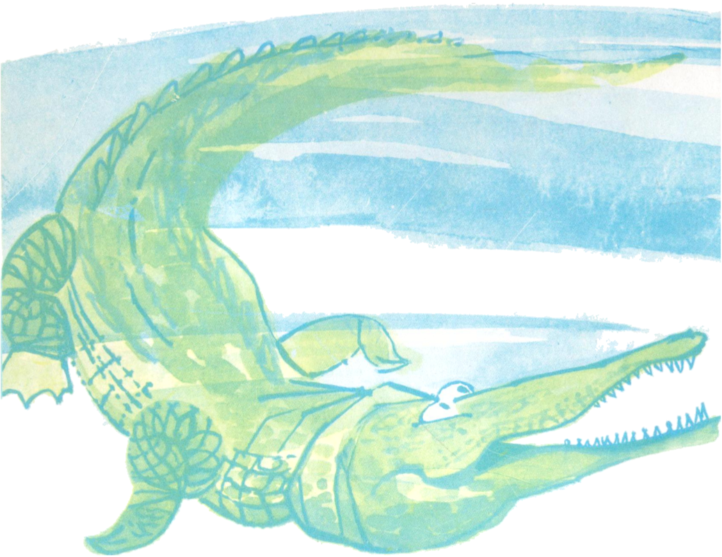
नंदिय को दाल में काला नजर आया। दूर से, और छाया में, वह चट्टान जैसा ही दीखता था, लेकिन पानी इतनी जल्दी कैसे उतर गया ? उसने द्वीप के किनारेवाली उस जगह से नीचे, जहां से वह छलांग लगाया करता था, पानी को ध्यान से देखा। वहां तो पानी उतरा नहीं था। फिर यहां कैसे उतरा ?



नंदिय को विश्वास हो गया कि नदी में रहनेवाला कोई दैत्य उसको फंसाने की कोशिश कर रहा है। उसने एक चाल चली।

उसने जोर से इस तरह कहा मानो चट्टान से बात कर रहा हो, "कहो, मेरे दोस्त, मैं वापस आ गया।" भला जवाब कहाँ से आता? उसने दुखी स्वर में फिर कहा, "मेरे दोस्त चट्टान, आज मुझसे बात क्यों नहीं कर रहे हो?"

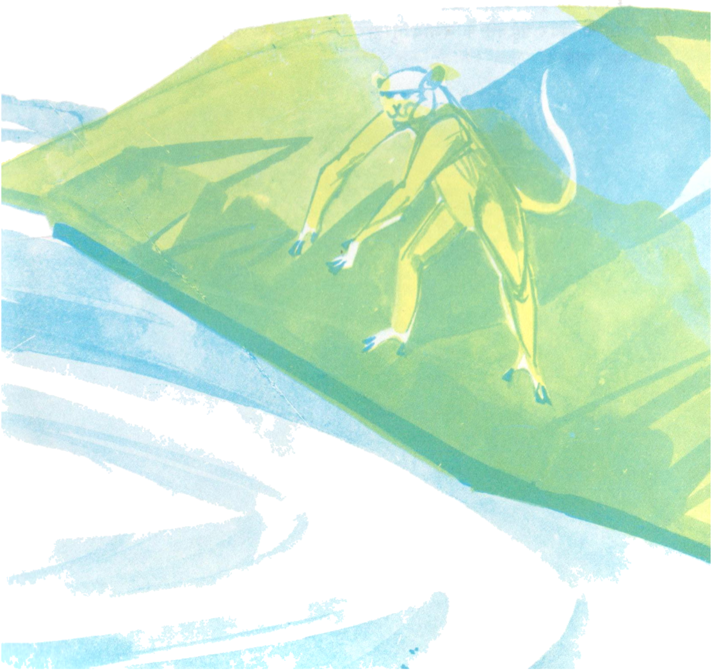
घड़ियाल ने सोचा, "ओह, जान पड़ता है चट्टान बंदर से बात किया करता है। चट्टान की तरफ से मैं खुद ही जवाब दूंगा।" और उसने चिल्ला



कर कहा, " मुझे अफसोस है मित्र, मैं सो गया था और तुमने पहले पुकारा तो मुझे सुनायी नहीं दिया ।"

नंदिय को अब पता चला कि जिसे उसने चट्टान समझा था वह असल में एक भारी-भरकम घड़ियाल था जिसके शरीर का ज्यादा हिस्सा पानी के अंदर था । सिर्फ उसका लंबा सर और शरीर का एक हिस्सा पानी के ऊपर था ।

उसने जोर से कहा, " तुम मेरे दोस्त चट्टान नहीं हो । तुम घड़ियाल हो ।



तुम चाहते क्या हो ?"

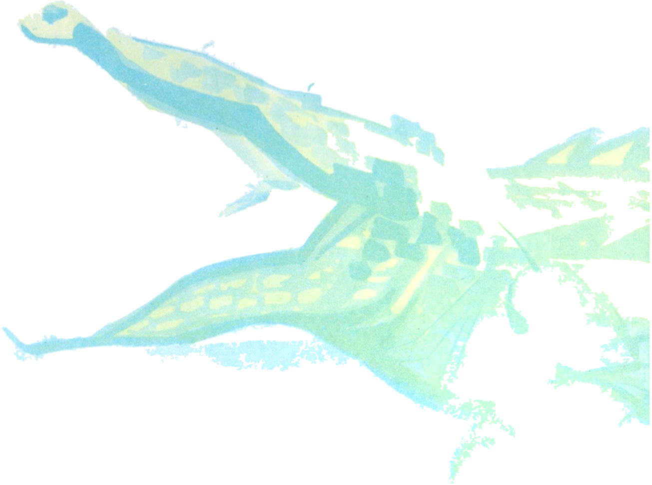
बंदर ने अपनी चालाकी से उसका भेद पा लिया था, इस बात पर घड़ियाल को बहुत क्रोध आया। उसने गुस्से से कहा, " मैं तुमको खाना चाहता हूँ।"

लौटने का और कोई रास्ता नहीं था, इस कारण नंदिय ने सोचा कि घड़ियाल को चकमा देकर ही जान बचायी जा सकती है। उसने कहा, " मेरे सामने और कोई रास्ता नहीं है इसलिए मैं हार मानता हूं। अपने आप को तुम्हारे हवाले करने को तैयार हूं। मैं छलांग लगाता हूं—तुम मुझे पकड़ने के लिए अपना मुंह पूरा खोल रखना। आंखें बंद रखना। कहीं ऐसा न हो कि मैं तुम्हारे मुंह के अंदर पहुंचने के बजाय तुम्हारे सिर पर गिरूं और तुम्हारी आंखें ही फूट जायें।"



मूर्ख घड़ियाल ने अपनी आंखें कस कर बंद कर लीं और मुंह पूरा खोल लिया। नंदिय पहले तो जरा घबराया, लेकिन फिर हिम्मत बांध कर इस तरह कूदा कि घड़ियाल के खुले मुंह से जितनी दूर हो सकता था उतनी दूर, उसकी पीठ पर जा कर गिरा। घड़ियाल की पीठ चट्टान की तरह सख्त थी। उसका फायदा उठा कर नंदिय ने वहां से छलांग लगायी और उड़ता हुआ-सा नदी के तट पर पहुंच गया और चटपट एक पेड़ पर चढ़ गया। पेड़ पर से उसने घड़ियाल को चिढ़ाते हुए चिल्ला कर कहा, " आज मेरा मन नहीं करता तुम्हारा भोजन बनने का। ऐसा करो बुद्धूराम, तुम अपनी दुम खा लो।"

कई ऋतुएं आयीं और चली गयीं। बंदरों के झुंड का बूढ़ा नेता मर गया। नंदिय की बुद्धिमानी और साहस के कारण झुंड के सब बंदर उसका रौब





मानते थे। वह नेता चुन लिया गया।

बंदरों का झुंड जहाँ रहता था वहाँ फलों के काफी पेड़ नहीं थे। इसलिए सब ने सोचा कि आम के पेड़ोंवाले द्वीप पर चल कर बसा जाय। झुंड के बड़े-बूढ़े बंदरों को विश्वास नहीं था कि द्वीप सचमुच इतना अच्छा है जितना नंदिय कहता है। लेकिन नौजवानों में बड़ा जोश था क्योंकि उन्हें नयी जगह जाने का शौक था।

जब बंदरों के झुंड ने द्वीप पर जाने का फैसला किया तो बरसात खत्म हो चुकी थी। इससे उनको बड़ी मदद मिली क्योंकि नदी लगभग सूख गयी थी, और उतरते हुए पानी के ऊपर कई चट्टानें बाहर निकल आयी थीं। एक चट्टान से दूसरी पर कूदते हुए बच्चे भी नदी को बिना कठिनाई के पार कर सकते थे। जब वे द्वीप पर पहुँचे तो बूढ़े बंदर भी, जिनके मन में इतना संदेह था, मान गये कि जगह सचमुच बहुत बढ़िया है।

लेकिन उनके सिर पर मुसीबत मंडरा रही थी।



सूखा मौसम आया तो गरमी बढ़ती गयी, प्यास के मारे गला सूखने लगा, और बंदर पानी पीने के लिए बार-बार नदी के किनारे जाने लगे। लेकिन नदी भी सूखती जा रही थी। बहती हुई धारा के स्थान पर जगह-जगह छोटी-छोटी तलैया-सी बन गयी थीं। इन तलैयों में भी पानी सूखने लगा तो वे गंदले कीचड़ से भरे पानी की गढ़ैया बन गयीं। गरमी और बढ़ी तो एक-एक कर के गढ़ैया भी सूखने लगीं। जब पुरानी जगह पर पानी बिल्कुल नहीं रहा तो बंदरों का झुंड सारे तट पर घूम-घूम कर पता लगाने लगा कि आगे कहीं पानी



है या नहीं। नदी में एक घुमाव था। यहाँ नदी के तट पर तेज ढलान थी और एक जगह एक बड़ी तलैया में खूब पानी था। जिन बंदरों ने तलैया को खोज निकाला था उनकी खुशी का ठिकाना नहीं था। वे पानी की ओर लपके जा रहे थे कि एक ने चिल्ला कर कहा, "ठहरो!" दूसरे ने इसका कारण पूछा तो उसने चुपचाप तलैया के किनारे नरम गीली जमीन की ओर इशारा किया। खरहों और झाऊ चूहों के पाँवों के बहुत से निशान पड़े थे। लेकिन सारे निशान तलैया की तरफ जानेवाले पैरों के ही थे। लौटते हुए पैरों के निशान



नहीं थे। मामला गड़बड़ नज़र आ रहा था। बंदरों ने तय किया कि यह बात फौरन चलकर अपने सरदार नंदिय को बता देनी चाहिए।

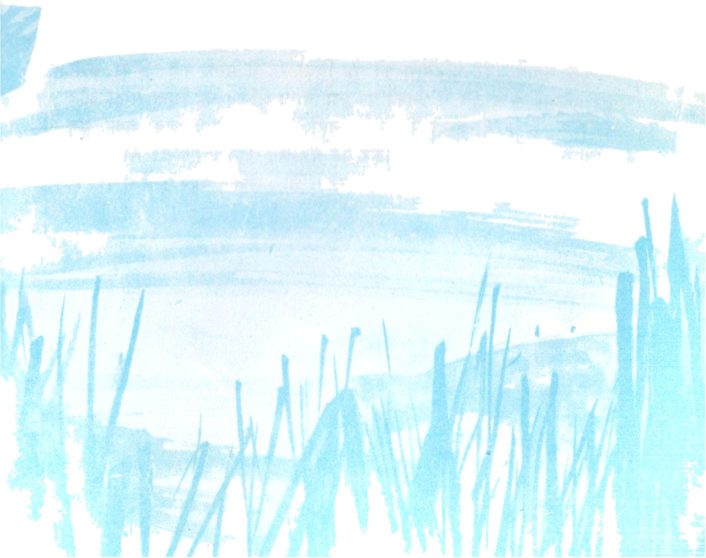
नंदिय ने वहां आकर पैरों के निशानों को बड़े ध्यान से देखा। तलैया की भी जांच की। तलैया के किनारे-किनारे सरकंडे उगे थे, जो छोटे-छोटे बांस जैसे दीखते थे। नंदिय ने ग़ौर से देखा तो उसको अपने पुराने दुश्मन घड़ियाल



का सिर और थूथन नज़र आया। वह सरकंडों की झाड़ के बीच छुपा हुआ था।

घड़ियाल समझ गया कि नंदिय ने उसको देख लिया है। यह सोचकर कि अब छिपे रहने का कोई फायदा नहीं है, उसने आवाज लगायी, "तुम सबके सब बंदर किसी न किसी तरह मरोगे। मैं उन सब जानवरों को खा डालूंगा जो यहाँ पानी पीने के लिए आते हैं। पानी नहीं पीओगे तो प्यास से मर जाओगे क्योंकि अभी दो महीने तक, जब तक वर्षा शुरू नहीं होती, मेरी इस तलैया के सिवा और कहीं भी पानी नहीं होगा।"

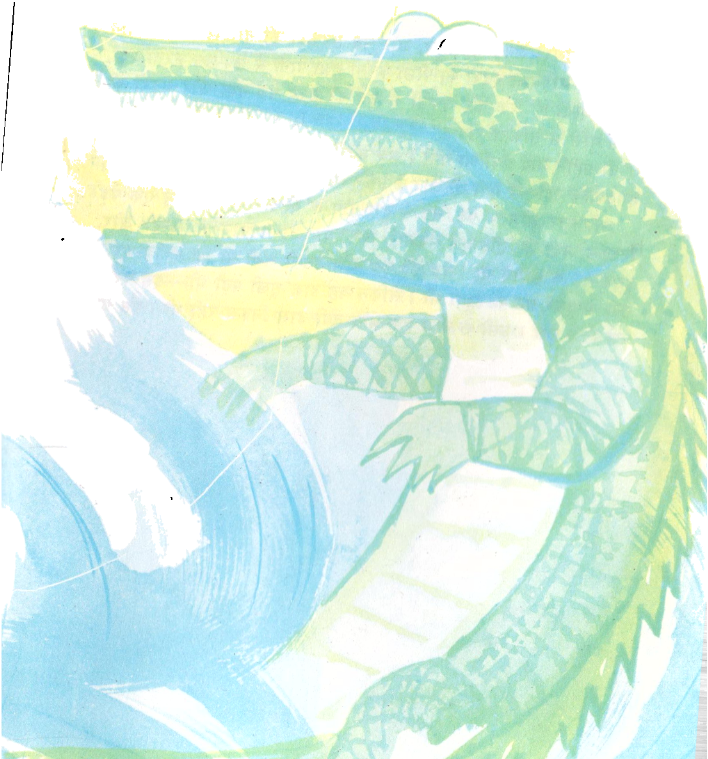
बहुत देर तक तो नंदिय को सूझा नहीं कि वह क्या करे। इसी बीच बंदर,



खास तौर से बच्चे, प्यास के मारे मरने लगे। फिर अचानक नंदिय को एक बहुत अच्छा उपाय सूझा। उसने बंदरों से कहा, "घड़ियाल से दूर, नदी के किनारे-किनारे फैल जाओ।" उसने कुछ सरकंडे उखाड़ लिये। एक का नरम कच्चा सिरा दांत से काट डाला और उसमें फूंक मारी। लेकिन सिरे से जरा नीचे एक गांठ थी। उसने एक और सरकंडा उखाड़ा। लेकिन उसमें नीचे की ओर गांठ थी। उसने गांठ के ऊपर तक का हिस्सा तोड़ डाला और फिर उसमें फूंक मारी। अब नली के बीच में कोई रुकावट नहीं थी और हवा दूसरे सिरे से निकल गयी। अब उस जगह से हटकर जहां घड़ियाल शिकार की ताक में पड़ा था, नंदिय तट से उतने पीछे चला गया जितनी सरकंडे की लंबाई थी। अब नली का एक सिरा तो उसने पानी में डाल दिया और दूसरे सिरे को मुंह में लगाकर पानी पीने लगा। नली के द्वारा पानी ऊपर चढ़कर उसके सूखे गले को तर करने लगा। उसने दूसरे बंदरों को आवाज लगायी और उनसे कहा कि वे भी इसी तरकीब से पानी पी लें।

कुछ शैतान बंदर घड़ियाल को मुंह चिढ़ा रहे थे मानो कह रहे हों, कैसा बुद्धू बनाया! घड़ियाल ने उनको पकड़ना चाहा, लेकिन वह बहुत मोटा और भारी था। जल्दी-जल्दी हिल-डुल नहीं सकता था। जब तक वह पहुंचता, तब तक बंदर पानी पीकर पेड़ पर चढ़ जाते। एक-दो बार उसने गुस्से से सरकंडों पर वार किया और उन्हें खींचा। लेकिन बंदर फुर्ती से वहां से





सरक कर दूसरी जगह जा पहुंचे, और नये सरकंडों की नलियों से पानी पीने लगे। मूर्ख घड़ियाल बंदरों का पीछा करता हुआ पानी में छप-छप करता रहा, लेकिन जल्दी ही थक कर लकड़ी के कुंदे की तरह पड़ गया और बंदरों की तरफ गुस्से से ताकता रहा।

दो महीने बाद वर्षा आ गयी। अब बंदरों को तलैया पर नहीं जाना पड़ता था क्योंकि नदी भर गयी थी और वे उसके तट पर कहीं भी पानी पी सकते थे।

अधिकतर आम के पेड़, तट से दूर, द्वीप के बीच में थे। लेकिन एक पेड़ बिल्कुल नदी के द्वीपवाले किनारे पर था जो चट्टान से उल्टी ओर, दूसरे तट के सामने था। पेड़ की एक डाल इतनी लंबी थी कि करीब-करीब नदी के दूसरे तट को छूती थी। लेकिन यह डाल सूखी पड़ी थी—इस पर न पत्ते थे न फल। उसी के नीचे एक और नयी डाल निकल रही थी। इस पर



बहुत सारे पत्ते थे। बौर लगने का समय आता तो पूरी डाल भर जाती।

नंदिय ने सोचा कि अगर इस डाल में फल लगें तो उसके झुंड के लिए खतरा हो सकता है। हो सकता है कि कुछ पके फल पानी में गिर कर बहते चले जायें। हो सकता है कि यह छोटी-सी नदी किसी बड़ी नदी से जा मिलती हो जिसके किनारे बस्तियां और गांव हों। अगर ये फल आदमियों के हाथ लग गये तो वे अवश्य पता लगाने की कोशिश करेंगे कि ये आये कहां से और ढूंढ़ते-ढूंढ़ते द्वीप पर पहुंच जायेंगे। तब तो वह अवश्य बंदरों को मार भगायेंगे।

यह सोचकर नंदिय ने बंदरों को आदेश दिया कि जैसे ही उस पेड़ पर अंबियां निकलें, वे उन्हें चट कर जायें। बंदरों ने उसके आदेश का पूरी तरह पालन किया।

लेकिन डाल के सिरे के पास चींटियों का घर था। उसकी ओट में एक आम लगा और बढ़ कर पकने लगा। चींटियों के डर से डाल के उस सिरे तक जाने



की बंदरों ने हिम्मत नहीं की। धरती जहां थी वहां से आम दीखता नहीं था।

एक दिन आम पक कर पानी में गिर पड़ा। धारा के साथ बहता हुआ नदी में जा पहुंचा और बहते-बहते वहां पहुंच गया जहां राजा के स्नान करने का घाट था। राजा का महल भी वहीं नदी के किनारे था। फल अभी ताजा था। राजा ने उसे खा लिया। उसने आज तक ऐसी मिठास और ऐसी सुगंधवाला आम नहीं खाया था।

राजा ने उसी समय फैसला किया कि जब तक वह पता नहीं लगा लेता कि यह स्वादिष्ट आम कहां से आया, वह चैन नहीं लेगा। राजा ने अपने धनुर्धरों को साथ लिया और एक नाव पर बैठ कर चल दिया। चलते-चलते वह उस छोटी नदी पर आ गये जो बड़ी नदी से मिलती थी। उन्होंने सोचा कि उतर कर देखा जाय कि तट पर क्या है। इस तरह घूमते-खोजते वे आम के पेड़ों-वाले द्वीप पर पहुंच गये।

राजा ने देखा कि द्वीप तो बंदरों से भरा हुआ है। वह उसी समय उनको वहां से खदेड़ देना चाहता था। लेकिन तब तक अंधेरा हो चला था। उसने



अपने धनुर्धरों से कहा, "जिन पेड़ों पर ज्यादा फल हैं उनकी चौकसी करो। बंदर उन्हें आज रात खाने न पायें। कल जैसे ही सबेरा होगा हम उन्हें अपने तीरों की बौछार से डरा कर भगा देंगे।"

एक छोटा बंदर वहीं पेड़ों के झुरमुट में छुपा बैठा राजा की बातें सुन रहा था। वह चुपचाप एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूदता हुआ द्वीप के दूसरे किनारे पर पहुंचा जहाँ नंदिय रात को आराम किया करता था। उसने नंदिय को सारी बात बतायी और घबराकर पूछा, "अब हम क्या करें? कल तो हम सब के सब तीरों से घायल होकर मर जायेंगे।"

नंदिय बड़ी देर तक सोचता रहा। फिर उसने कहा, "बचने का एक रास्ता है। जाओ, जाकर सबसे कह दो कि घंटे भर के अंदर द्वीप के उस किनारे पर सूखी डालवाला जो पेड़ है, उसके पास इकट्ठे हो जायें।"

बरसात पूरे जोर पर थी इसलिए नदी में पानी भी बाढ़ पर था। जिस चट्टान पर बंदर नदी के तट से कूदा करते थे वह अब कई हाथ पानी में बिल्कुल डूब गया था। उस रास्ते से भाग निकलना असंभव था। इसलिए नंदिय उसके



उल्टी तरफ गया। वहाँ जो अकेला पेड़ था उस पर चढ़ गया, और सावधानी से उस सूखी डाल पर चलने लगा जो नदी के दूसरे तट तक चली गयी थी। डाल के सिरे पर पहुंच कर उसने देखा कि फासला कितना है। वहाँ से छलांग लगाये तो तट पर पहुंच सकता है या नहीं। उसने तय किया कि शायद पहुंच सकता है। उसने छलांग लगायी और नदी के उस पारवाले एक पेड़ पर जा उतरा। उसने उस फासले का अंदाज लगाया जो उसने अपनी इस छलांग में तय किया था। फिर एक पतला लेकिन मजबूत बाँस उखाड़ा जो सबसे लंबा था—उसकी लंबाई करीब-करीब उस फासले के बराबर ही थी।

अब वह बाँस को लेकर पेड़ पर चढ़ गया और उसका एक सिरा नदी की ओर जानेवाली एक डाल के साथ मजबूती से बाँध दिया। फिर संभल-संभल कर वह बाँस पर चढ़ गया। यह काम बड़ा कठिन था क्योंकि बाँस पतला भी था और चिकना भी। लेकिन किसी तरह वह बाँस के दूसरे सिरे तक पहुंच गया। दूसरे सिरे को उसने अपनी कमर के साथ बाँध लिया। फिर बाँस के



सिरे को इधर-उधर हिलाने लगा। वास नदी के ऊपर काफी घेरे में झूलने लगा। झूलते-झूलते वह नदी के उस तट तक पहुँच जाता था जहाँ सूखी डाल थी। वहाँ तक पहुँच कर नंदिय ने सूखी डाल को थाम लिया।

उसकी तरकीब यह थी कि बाँस के सिरे को कमर से खोल कर सूखी डाल से बांध दे जिससे कि पतले नाजुक बाँस का पुल नदी पर बन जाय। पुल नाजुक तो होगा लेकिन खतरनाक नहीं होगा। लेकिन अब उसने देखा कि बाँस की लंबाई और दूरी का उसका अंदाज़ गलत था। बाँस करीब दो हाथ छोटा था। दो हाथ के फासले की कमी उसके शरीर की लंबाई से पूरी हो रही थी। कमर से लेकर सिर तक उसकी लंबाई खाली जगह को ठीक-ठीक भर देती थी। पर वह बाँस कैसे खोले? अगर दांत से काट कर खोलता है तो बाँस छूटकर एकदम पीछे चला जायेगा। वह सोच में पड़ गया कि क्या करे। क्या फिर से यह सारा प्रयोग कर के देखे? नंदिय इसी सोच में था कि अचानक द्वीप पर बड़ा शोरगुल सुनायी दिया। राजा के धनुर्धरों ने सूर्योदय की प्रतीक्षा



किये बिना तीरों की बौछार शुरू कर दी थी। नंदिय ने झटपट फैसला किया कि अब सोचने-विचारने का समय नहीं है। वह बाँस से बँधे अपने शरीर से ही पुल का बाकी हिस्सा बनायेगा और बंदरों की जान बचायेगा।

उसने धीमी आवाज़ में बंदरों को पुकारा। नंदिय के बनाये पुल को पार कर के नदी के उस तट पर पहुँचने के लिए सारे बंदर नीचे इकट्ठे हो गये। बंदरों की संख्या बहुत थी। एक-एक कर के नंदीय के शरीर पर चढ़कर बाँस के पुल को पार करने लगे। कुछ देर बाद नंदिय की ताकत जवाब देने लगी। आखिर वह अब जवान तो था नहीं। अचानक नंदिय की छाती में बड़े जोर का दर्द उठा। वह छटपटा उठा। उसको लगा कि अब किसी ने उसके ऊपर पैर रखा तो वह मर जायेगा। लेकिन अब भी एक बंदरिया बची थी जिसके दो बच्चे सहमे हुए उसके पेट से चिपके थे। नंदिय ने दर्द पर काबू पाने की कोशिश की और यह ज़रा भी पता नहीं चलने दिया कि उसको कोई तकलीफ है। दाँत भींचकर उसने बंदरिया को इशारा किया कि वह जल्दी पार करे।

जैसे ही वह बंदरिया दूसरे तटवाले पेड़ पर पहुंची, सर्वनाश हो गया। दूसरे तट पर बाँस और पेड़ को बाँधनेवाली गाँठ धीरे-धीरे कमज़ोर पड़ती जा रही थी। एक-एक करके बंदरों का बाँस पर चढ़ कर चलने का बोझ उसके लिए बहुत ज्यादा हो गया और गाँठ चरमरा कर टूट गयी। अचानक जो धक्का लगा तो उधर नंदिय की पकड़ छूट गयी और वह धरती पर गिर पड़ा। वह बेचारा तो पहले ही अधमरा हो रहा था।

राजा काफ़ी देर से वहाँ चुपचाप खड़ा सब कुछ देख रहा था। धुंधली चाँदनी में साफ़-साफ़ तो नहीं दीख रहा था, पर उसने यह तो देख ही लिया था कि बंदर द्वीप छोड़ कर जा रहे हैं। वह यही तो चाहता था, इसलिए संतोष से खड़ा देख रहा था। जब कमर से बँधे बाँस को साथ लिये नंदिय नीचे गिरा तब राजा को पहली बार पता चला कि क्या हुआ। वह दौड़ा-दौड़ा नंदिय के पास पहुंचा और बड़े प्यार और जतन से उसकी सुश्रूषा करने लगा।

उसने देखा कि नंदिय की हालत खराब है और वह मरने ही वाला है। राजा ने आँखों में आँसू भरकर कहा, "इस तरह दूसरों के लिए अपने प्राणों का बलिदान करने वाला कोई मनुष्य भी नहीं देखा, न किसी के बारे में सुना। अगर तुम्हारी कोई अंतिम इच्छा हो तो बताओ। अगर मेरी ताकत के बाहर न हुआ तो मैं उसे पूरा करूंगा।"



बहुत ही क्षीण स्वर में नंदिय ने कहा, "मैं अपने दल को बहुत प्यार करता हूं। उसको कोई कष्ट न पहुंचने पाये, बस।" इतना भी उसने बड़े कष्ट से कहा। उसके बाद ही वह मर गया।

राजा ने जो कुछ देखा उससे इतना प्रभावित हुआ कि उसने फैसला किया कि वह द्वीप पर कब्जा करने की कोशिश नहीं करेगा, बल्कि उसे बंदरों को ही वापस कर देगा।

सवेरा हुआ तो उसने अपने सैनिकों से कहा कि द्वीप से लेकर नदी के किनारे तक बांस का मजबूत पुल बना दें। दूसरे तट पर खड़े बंदर सब कुछ देख रहे थे, लेकिन उन्होंने पुल को पार करने की हिम्मत नहीं की क्योंकि वह समझे नहीं थे कि राजा का इरादा क्या है। जब राजा ने उनके नेता नंदिय के दाह की तैयारी की तो उन्हें पता लगा कि उसकी मृत्यु से राजा भी उतना ही दुखी है जितना वे हैं। यह देख कर वे दल बांध कर अपने नेता को अंतिम विदाई देने आ पहुंचे।

नंदिय के दाह-संस्कार के बाद राजा ने उसकी याद में द्वीप पर एक छोटा-सा स्तंभ बनवा दिया। स्तंभ के नीचे एक शिला पर लिखा था, "यह बगीचा बंदरों के इस दल का विहार है। राजा का आदेश है कि इस स्थान पर कोई न जाये।" राजा अपने साथ महल के बगीचे में बोने के लिए कुछ आम ले गया। उसने सोचा कि उन पेड़ों पर मीठे फल लगेंगे और जब तक वह जीयेगा उसे नंदिय के अद्भुत त्याग की याद दिलाते रहेंगे।



रु. 17.00 ISBN 978-81-237-0504-0
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

